Impact Factor :- 7.245 (SJIF) ISSN 2349-1027

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INDO WESTERN RESEARCHERS

(UGC Approved, Peer Reviewed & Refereed Indexed Research Journal)

(Year -XIII, Issue - XXV, Vol. - II : Feb. 2026 To July 2026) Special Issue

Vidya Vikas Mandal Pathrud's

SHANKARRAO PATIL MAHAVIDYALAYA, BHOOM

Tq. Bhoom, Dist. Dharashiv-413504 (Maharashtra)

(NAAC Re - Accredited B++ Grade with CGPA 2.77)

Affliated to Dr. B. A. M. University Sambhajinagar

Sponsored by

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar, (M.S.) India

Two Days National Symposium

On

Post-Pandemic Reflections in Literature & Media

(Special Emphasis on Marathi, Hindi & English Languages)

March 4 & 5, 2026

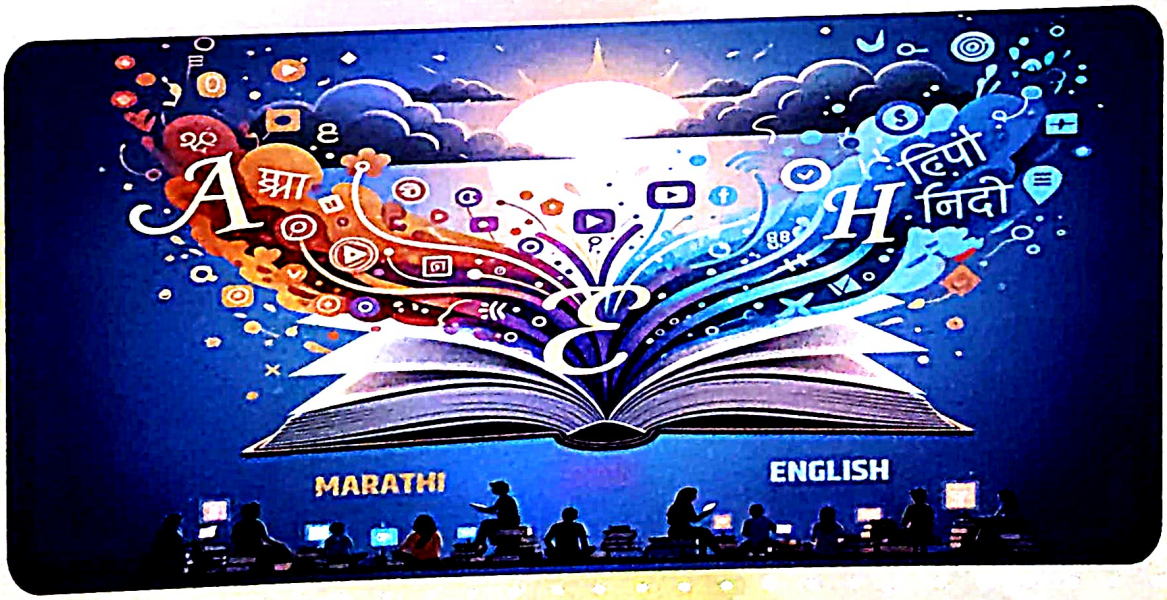

Editor In Chief
Dr. Anuradha S. Jagdale

IMPACT FACTOR 7.245 SJIF

ISSN 2349-1027

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for All Subjects

INDO WESTERN RESEARCHERS

UGC APPROVED, REFERRED & PEER REVIEWED INDEXED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXV, Vol. II
Year-XIII, Bi-Annual(Half Yearly)
(Feb. 2026 To July 2026)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website
www.jpiap.com

Contact : - 8484818000
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
irasg1411@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com

Published by :
Indo Asian Publication,
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 400/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Anuradha S. Jagdale
Principal
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

EDITORS

Dr. Gokul H. Surwase
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Mr. Gautam U. Tijare
Head, Dept. of Marathi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Dr. Santosh B. Bhandwalkar
Head, Dept. of Hindi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Dr. Rajshree L. Taware
Dept. of Hindi,
Shankarrao Patil Mahavidyalaya,
Bhoom, Dist. Dharashiv (M.S.)

Disclaimer: This is a Special Issue of the journal published in association with the conference. Selected papers have been published after peer review. The journal's ISSN and periodicity remain unchanged.

अ. क्र.	अनुक्रमणिका	पेज. नं.
1	महामारी के बाद साहित्य में अलगाव, पहचान और आत्मबोध **डॉ. राम शरण सेठ**	1
2	महामारी पश्चात हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श (एक समकालीन अध्ययन) **डॉ. अप्पासाहेब टाळके**	3
3	वैश्विक महामारी के बाद हिंदी साहित्य में संवेदना और मानवीय मूल्य का चित्रण **डॉ. दत्ता साकोळे**	6
4	महामारी के बाद का साहित्य : मानवीय संवेदना और मूल्य **डॉ. नंदा बाळकृष्ण उबाळे**	9
5	भारतीय संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव **डॉ. मंत्री रामधन आडे**	12
6	हिंदी साहित्य ग्रंथालय का इतिहास और वर्तमान स्वरूप **डॉ. मीना साहेबराव खरात**	17
7	महामारी के बाद के साहित्य में मजदूरों की समस्या **डॉ. ललिता राठोड**	21
8	वैश्विक महामारी और मीडिया का बदलता रूप **डॉ. शीतल श्रीनिवास बियाणी**	25
9	हिंदी कविताओं में फूलों का चित्रण **प्रा. डॉ द्वारका गिते-मुंडे**	28
10	हिंदी काव्य में महामारी का चित्रण : कोरोना के विशेष संदर्भ में **प्रा. डॉ. रामहरी काकडे**	31
11	कोरोना महामारी से प्रभावित जन जीवन का हिंदी चलचित्रों में चित्रण **प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ**	36
12	कोविड-19 और अशोक वाजपेयी की कविता **प्रा. डॉ. सय्यद अमर फकीर**	40
13	महामारी के बाद के हिंदी साहित्य में व्यक्त मानवीय मूल्य **प्रा. डॉ. शिवहार भुजंगराव साळुंके**	44
14	आपदा-कालीन यथार्थ : हिंदी प्रिंट, डिजिटल मीडिया और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन **प्रा. शफीक लतीफ चौधरी**	49
15	चित्रा मुद्गल लिखित 'लॉकडाऊन' कहानी में अभिव्यक्त पारिवारिक जीवन और स्त्री **प्रा.डॉ. चित्रा धामणे**	51
16	आपदा समय और हिंदी साहित्य **प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी**	54
17	'समय, साहित्य और समाज'(कविता के विशेष संदर्भ में) **प्रो.डॉ. अलका गडकरी**	56
18	वैश्विक महामारी और मजदूर वर्ग **प्रोफेसर डॉ. शाम बबनराव सानप**	58

ISSN : 2349-1027
INDO WESTERN RESEARCHERS
Impact Factor 7.245 SJIF
Feb. 2026 To July 2026
Issue : XXV, Vol : II (Special Issue)

11.
कोरोना महामारी से प्रभावित जन जीवन का हिंदी चलचित्रों में चित्रण

प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, धाराशिव

उपोद्घात :-

मानवमात्र के जीवन में सुख की तरह दु:ख भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव के लिए सर्वाधिक दु:खदायी वे यातनाएँ देती हैं, जो उन्हें प्राकृतिक और मानवनिर्मित आपदाओं से प्राप्त होती हैं । ऐसी ही आपदाओं में से एक भयानक आपदा कोरोना महामारी के कारण हमारे सामने उपस्थित हुई है । अभी तक यह तय नहीं हो पाया है कि कोरोना अथवा कोविड-१९ प्राकृतिक आपदा है या मानवनिर्मित आपदा है । खैर ! जो हो सो है ही । इसी आपदा के कारण न जानें कितने जीवन हमेशा के लिए उजड़ गये, न जानें कितनी माताओं की कोख सूनी हो गयी, न जाने कितनी बहनों के सिन्दूर उजड़ गये । कोरोना महामारी के चलते बड़े-बड़े चलचित्र निर्माताओं ने ओटीटी प्लेटफॉर्म्स का मार्ग चुना । एक नई उम्मीद इस ओटीटी प्लेटफॉर्म ने उत्पन्न कर दी । कोरोना महामारी के पश्चात इसी महामारी में अस्त-व्यस्त जन जीवन को दिखानेवाले कतिपय चलचित्र प्रदर्शित हुए जैसे – मधुर भंडारकर निर्देशित " इण्डिया लॉक डाउन ", अनुभव सिन्हा निर्देशित " भीड़ ", विवेक रंजन अग्निहोत्री निर्देशित " द वैक्सीन वॉर " और आरती एस. बागड़ी निर्देशित " चलती रहे जिन्दगी " ! इन में से ' इण्डिया लॉक डाउन ' और ' द वैक्सीन वॉर ' सरकारी प्रबंधन की प्रशंसा करती हैं तो ' भीड़ ' सरकारी तंत्र की निंदा करती है और ' चलती रहे जिन्दगी ' तटस्थ रहती है । अब हम संक्षेप में इन चारों चलचित्रों में चित्रित कोरोना महामारी से प्रभावित जन जीवन की समीक्षा करने का प्रयास करेंगे -

१) मधुर भंडारकर निर्देशित " इण्डिया लॉक डाउन " (ज़ी ५ / दि. २ दिसंबर २०२२) :-

मधुर भंडारकर निर्देशित चलचित्र ' इंडिया लॉकडाउन ' कोरोना महामारी से जुड़ी घटनाओं पर आधारित है । इस में प्रतीक बब्बर, सई ताम्हणकर, श्वेता बसु प्रसाद, आहना कुमरा और प्रकाश बेलबाड़ी की अहम भूमिका है। इस चलचित्र को देखने के बाद आपकी कोरोना महामारी से जुड़ी कई बुरी यादें ताजा हो जाती हैं । गौरतलब है कि भारत में कोरोना महामारी से जुड़ा लॉकडाउन २४ मार्च २०२० में लगा था। सब कुछ रुक गया था। यह चलचित्र उसी से जुड़ी कहानी बताती है। इसमें चार कहानियाँ बताई गई हैं। चलचित्र चारों कहानियों को एक साथ लेकर चलती है । इसमें प्रवासी मजदूर दम्पति, एक अडल्ट सेक्स वर्कर, एक पायलट और एक बेटी और पिता की कहानी है । सभी की समस्याओं को सटीक तरीके से फिल्माया गया है। चलचित्र का पहला भाग काफी डरावना है। इसमें चारों के संघर्ष को बताया गया है। यह महामारी के दौरान के पहले चरण की आपको याद दिलाती है, जहाँ पुलिस की गाड़ियाँ दिन भर पेट्रोलिंग किया करती थी । मोबाइल और टीवी ही आपका एक बहुत अच्छा दोस्त हुआ करता था ।

चलचित्र का दूसरा भाग भी संघर्षों से जुड़ा हुआ है। माधव और फूलमती अपनी दोनों बेटियों को खाना खिलाने के लिए कूड़े के ढेर में खाना ढूंढते हैं। इस सीन को देखकर आपका दिल रो देगा। वहीं अडल्ट सेक्स वर्कर मेहरून्निसा की कहानी भी काफी शानदार है । वह इस बुरे दौर में भी अपने आपको खुश रखने का प्रयास करती हैं । चलचित्र का चरमोत्कर्ष और अंत भी दमदार है। इसमें बताया गया है कि आप अपने जीवन से संतुष्ट रहिए । पायलट को वर्क फ्रॉम होम से जूझना पड़ता है । एम नागेश्वर राव और उनकी गर्भवती बेटी स्वाति की खुशी आपकी आँखों में आँसू ले आएगी । चलचित्र में सभी कलाकारों

ने दमदार भूमिका निभाई है। सभी ने कोरोना महामारी के दौरान की घटनाओं को जीने का पूरा प्रयास किया है। प्रतीक बब्बर ने माधव और श्वेता बसू प्रसाद ने बतौर मेहरून्निसा बहुत अच्छा काम किया है। सभी ने अपनी भूमिका को न्याय देने का प्रयास किया है। इस चलचित्र में कोई भी बड़ा गाना नहीं है। मधुर भंडारकर चलचित्र को वास्तववादी रखने में सफल हुए हैं। उन्होंने इसके पहले चांदनी बार, फैशन, हीरोइन, पेज ३, कॉर्पोरेट, ट्रैफिक सिग्नल, इंदु सरकार जैसे चलचित्रों का निर्देशन किया है।

मधुर भंडारकर चलचित्र के माध्यम से एक सन्देश भी दे जाते हैं। चारों मानवीय कहानियाँ चलचित्र के माध्यम से बताई गई हैं। इसमें कोरोना वायरस की नेगेटिव रिपोर्ट को सेलिब्रेट करना हो या घर पर कहीं ना जाते हुए भी खुद को तैयार करना हो। इस सभी चीजों को चलचित्र में दिखाया गया है। चलचित्र में गरीब तबके के लोगों की कहानी या मध्य वर्ग के लोगों की लड़ाई सभी को दिखाने का प्रयास किया गया है।

२) अनुभव सिन्हा निर्देशित " भीड़ " (थिएटर / २४ मार्च २०२३ और नेटफ्लिक्स / २४ मई २०२३)

राष्ट्रव्यापी कोरोना वायरस से प्रेरित लॉकडाउन ने दुनिया भर में अनगिनत लोगों की जिंदगियों को ऐसे जख्म दिए, जो भले भर चुके हैं, मगर उनके निशान आज भी शेष हैं। 'मुल्क', 'थप्पड़', 'आर्टिकल १५', 'अनेक' जैसी सोच प्रेरक और सामजिक मुद्दों को अधिरेखित करने वाले चलचित्रकार अनुभव सिन्हा इस बार कोरोना काल में हुई प्रवासी मजदूरी की बदहाली और बेबसी को अपने वास्तववादी अंदाज में बयान करते हैं। इस बार अनुभव अपनी चलचित्र निर्मिति में एक पायदान और ऊपर इसलिए भी नजर आते हैं कि उन्होंने अपने घरों को वापिस जाने वाले मजदूरों के दर्द को ब्लैक एंड वाइट टोन में समेटा है और इसमें कोई शक नहीं कि चलचित्र का यह सफेद और स्याह रंग कहानी के किरदारों का काला और उजलापन दोनों दर्शाता है।

अनुभव सिन्हा ने अपने साक्षात्कार में कहा था कि चलचित्र की कहानी लॉकडाउन की डिस्टर्ब और द्रवित करने वाली घटनाओं पर आधारित है, तो कहानी की शुरुआत उस दिल दहला देने वाली सत्य घटना से होती है, जहाँ १६ मजदूर ट्रेन के नीचे महज इसलिए कुचले गए, क्योंकि वे पटरी के रास्ते अपने गाँव वापिस जा रहे थे और उन्हें लगा था कि ट्रेन बंद है और वे पटरियों पर ही सो गए थे। पलायन के दौरान बलराम द्विवेदी (पंकज कपूर) जो पेशे से चौकीदार है, जो हजारों लोगों की तरह अपने परिवार को गाँव वापिस पहुंचना चाहता है, दूसरी तरफ हाई सोसायटी की दिया मिर्जा है, जो सड़क के रास्ते अपनी शोफर ड्रिवन फॉर्च्यूनर को लेकर बेटी को हॉस्टल से लिवा लाने के लिए निकली है। पुलिस विभाग की एक टीम है, जो पलायन करने वाले श्रमिकों और सिस्टम के बीच जूझ रही है, जिसमें सूर्य कुमार सिंह उर्फ टीकस (राजकुमार राव) को उसका बॉस यादव (आशुतोष राणा) उस संवेदनशील और भीड़ भरी चेक पोस्ट का इंचार्ज तो बना लेता है, मगर यहाँ सूर्या को अपने निचली जाति से होने के कारण हीन और कमतर महसूस करवाया जाता है। एक चैनल रिपोर्टर विधि प्रभाकर (कृतिका कामरान) कैमरा पर्सन के साथ वहाँ के हालात की विडंबनाओं को दर्शाने की कोशिशों में लगी है। इस कहानी में साइकिल पर अपने पिता को मीलों ले जाने वाली उस लड़की का ट्रैक भी है और सीमेंट मिक्सचर से निकलते लोग भी भी हैं, जिसने कोरोना काल में लोगों की आँखें नम कर दी थीं, तो तबगीली जमात का सन्दर्भ भी है, जिसने लोगों को आपस में ही विभाजित कर दिया था। इन सभी बेबस कहानियों के बीच दलित सूर्य और ऊंची जाति की मेडिकल छात्रा रेणु शर्मा (भूमि पेडनेकर) की प्रेम कहानी भी है, जो जात-पाँत की विषमताओं से गुजर कर अपना रास्ता तलाशने का दुस्साहस करती है।

अनुभव सिन्हा अपने चलचित्र में उन कई हादसों और घटनाओं को दर्शाते हैं, जो कोरोना की त्रासदी का शिकार हुए थे, मगर उनका फोकस प्रवासी मजदूर और सामाजिक और जातिगत भेदभाव पर रहता है। वे समाज के एक विशेष वर्ग के दुःख, निराशा और हताशा का सजीव चित्रण करते हैं, मगर उस सिनेमाई पटल पर वे एक ऐसा संसार रच देते हैं, जो आपको बेचैन कर देता है। कास्ट और क्लास के अंतर के साथ सिस्टम की मजबूरियों को भी अपने किरदारों के जरिए मुखर बना ले जाते हैं। उनके किरदारों की बुनावट सधी हुई है। चलचित्र की लिखावट कसी हुई है, जिसमें, "ताकतवर और गरीब का न्याय

सेम होना चाहिए', 'हम जैसे निकले थे, साहब कहीं पहुंचे ही नहीं', 'इनकन्वीनियंट हैं, अनकंफर्टेबल है फिर भी हमारा इंडिया इन्क्रेडिबल है' जैसे चुटीले डायलॉग बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देते हैं। इसे अनुभव सिन्हा ने सौम्या तिवारी और सोनाली जैन के साथ मिलाकर लिखा है। ब्लैक एंड वाइट टोन में सिनेमटोग्राफर सौमिक मुखर्जी बाजी मार ले जाते हैं। चलचित्र का बैकग्राउंड स्कोर विषय को गहराई प्रदान करता है। हाँ, कई लोगों को ऐसा लग सकता है कि अनुभव सिन्हा लॉकडाउन की दूसरी त्रासदियों को भी समेटते तो बेहतर होता, मगर इससे कहानी के घिचपिच होने की संभावना थी। अनुराग सिन्हा साइकिया के संगीत में सजे गाने कहीं से भी सातत्य में खलल नहीं डालते बल्कि पटकथा को बल देते हैं।

३) विवेक रंजन अग्निहोत्री निर्देशित " द वैक्सीन वॉर " (डिस्नी हॉट स्टार / २८ सितम्बर २०२३) :-

हम सभी जानते हैं कि कोरोना काल का प्रभाव किस तरह से विश्वव्यापी रहा है। हम में से ऐसा कोई नहीं, जो इस महामारी की आग में झुलसा न हो। किसी ने अपनों को खोया, तो कोई अपनी रोजी-रोटी से महरूम हुआ, तो कोई अपनी जमीन से जुदा हो गया। इन चलचित्रों ने कोरोना वायरस और लॉकडाउन के हाहाकारी रूप को पर्दे पर दर्शाने का प्रयास किया। विवेक अग्निहोत्री की ' द वैक्सीन वॉर ' भी इसी श्रृंखला की चलचित्र साबित होती है, मगर उनकी चलचित्र में नयापन यह है कि यह भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा देश का अपना वैक्सीन बनाने के यात्रा को अभिव्यक्त करते हैं।

कहानी की शुरुआत होती है, जनवरी २०२२ से। पूरा देश नए साल के जश्न में डूबा है और तभी आय सी एम् आर (द इंडियन काउंसल ऑफ मेडिकल रिसर्च) के महानिदेशक बलराम भार्गव को एक ऐसे वायरस के बारे में पता चलता है जिसका मरीज चीन के वुहान में पाया गया है। चलचित्र की कहानी को १२ भागों में विभाजित किया गया है। कोरोना वायरस का भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? इस पर चर्चा के बाद बलराम भार्गव (नाना पाटेकर) और उनकी पूरी टीम को कोविड-१९ के खिलाफ भारत की पहली वैक्सीन बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है। बलराम की पूरी टीम युद्ध स्तर पर टीका बनाने की मुहिम में जुट जाती है। कहानी वैज्ञानिकों द्वारा टीका बनाने की चुनौतियों के साथ-साथ इनके घरेलू पहलुओं की जटिलताओं के साथ आगे बढ़ती है।

बलराम भार्गव की इस टीम में डॉ. प्रिया अब्राहम (पल्लवी जोशी), डॉ. प्रज्ञा यादव (निवेदिता भट्टाचार्य), डॉ. श्रीलक्ष्मी मोहनदास (सप्तमी गौड़ा) जैसी होनहार और जुझारू वैज्ञानिक हैं, तो दूसरी तरफ वैक्सीन बनाने के इस असंभव से लगने वाले काम को पस्त करने के लिए सरकार विरोधी पत्रकार रोहिणी सिंह धुलिया (राइमा सेन) भी हैं, जो भारत की बनाई हुई वैक्सीन को लगातार सब्सटैंडर्ड का दर्जा देकर नकारती जाती है और इसकी मंशा पर सवाल उठाती है। कोरोना काल में अपर्याप्त संसाधनों और विरोध के बीच भारत के वैज्ञानिक न हारने वाले जज्बे के साथ कैसे अपनी बनाई हुई वैक्सीन से देश और दुनिया के करोड़ों लोगों के लिए मसीहा साबित होते हैं, यही चलचित्र का चरमोत्कर्ष है।

निर्देशक विवेक अग्निहोत्री की यह चलचित्र कोरोना के असली योद्धा यानी महिला वैज्ञानिकों द्वारा बनाई गई वैक्सीन पर आधारित है। उनकी यह चलचित्र गोइंग वायरल पर आधारित है। भारत बायोटेक द्वारा आई. सी. एम. आर. और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआईवी) के सहयोग से बनाए गए टीके को या वैक्सीन को बनाने के पूरी प्रक्रिया को उन्होंने काफी भावुक अंदाज में दर्शाया है। वो जहाँ वैज्ञानिकों की कार्यप्रणाली, चुनौतियों, आर्थिक फंड की कमी के साथ-साथ उनके मानवीय पहलुओं को खूबसूरती से दर्शाते हैं, वहीं देशभर में फैली कोरोना की विभीषिका को भी दिखाते हैं। चलचित्र में ऐसे कई पल हैं, जब देश पर गर्व की अनुभूति होती है और हम अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाने की मनोदशा में आ जाते हैं। चलचित्र का पूर्वार्द्ध काफी रोचक है और बाँधे रखता है, मगर उत्तरार्द्ध में चलचित्र की गति धीमी पड़ जाती है, सरकार की उपलब्धियों का महिमामंडन करती नजर आता है।

कहानी में सरकार विरोधी मीडिया की प्रतिनिधि के रूप में साइंस एडिटर बनी राइमा सेन का किरदार अतिरेक करता नजर आता है। असल में वही कहानी की असली खलनायिका हैं, मगर विवेक इस पहलू को संतुलित करने से चूक गए हैं।

मीडिया का एक नकारात्मक पहलू के साथ उन्हें सकारात्मक रूप को भी दर्शाना चाहिए था। चूंकि चलचित्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया पर है, तो कई जगहों पर हल्के-फुल्के दृश्यों का अभाव नजर आता है।

अभिनय के मामले में यह चलचित्र कहीं भी कमतर साबित नहीं हुई हैं। बलराम भार्गव के रूप में नाना पाटेकर की दमदार वापसी हुई है। उनके अभिनय की विशिष्ट शैली और पॉज लेकर डायलॉग बोलने वाला अंदाज पर्दे पर मजेदार लगता है। चलचित्र में महिला साइंटिस्ट्स के रूप में कई समर्थ अभिनेत्रियों का जलवा देखने को मिलता है, जिसमें पल्लवी जोशी अपने मजबूत अंदाज में नजर आती हैं। संवाद अदायगी और भावुक दृश्यों में वे दिल जीत लेती हैं। वैज्ञानिकों की टीम में शामिल सप्तमी गौड़ा और निवेदिता बसु ने बहुत उम्दा काम किया है। अनुपम खेर जैसे काबिल अभिनेता को ज्यादा फूटेज नहीं दिया गया है। सहयोगी कास्ट भी दमदार है। एंटी गवर्नमेंट जर्नलिस्ट के रूप में राइमा सेन ने सशक्त अभिनय किया है।

४) आरती एस. बागड़ी निर्देशित " चलती रहे जिन्दगी " (ज़ी ५ / २६ जुलाई २०२४) :-

इन्द्रनील सेनगुप्ता और बरखा सेन गुप्ता की चलचित्र चलचित्र की कहानी कोविड काल की है जहाँ एक बिल्डिंग में लोग अलग अलग ज़िंदगियाँ जी रहे हैं और कोविड की वजह से सबको घर में बंद रह जाना पड़ता है पर इन बंद दरवाज़ों के बीच इनकी ज़िंदगियों में क्या उथल पुथल मचती है यही इस चलचित्र में दिखाया गया है।

चलचित्र की कहानी कोविड काल की है जहाँ एक बिल्डिंग में लोग अलग-अलग ज़िंदगियाँ जी रहे हैं और कोविड की वजह से सबको घर में बंद रह जाना पड़ता है पर इन बंद दरवाज़ों के बीच इनकी ज़िंदगियों में क्या उथल-पुथल मचती है यही इस चलचित्र में दिखाया गया है। सिद्धांत कपूर का किरदार ग़रीब ब्रेडवाला है पर सबका ख़्याल रखता है लेकिन मजबूरन उसे मुंबई छोड़ना पड़ता है। आरू (बरखा सेनगुप्ता) की ज़िंदगी में तूफ़ान आ जाता है जब उससे पता चलता है की उसका पति उसी बिल्डिंग में है पर कहीं और, किसी और के साथ है। कोविड काल की कुछ ऐसी ही ज़िंदगी और घटनाओं पर रोशनी डालता है यह चलचित्र।

ये चलचित्र अच्छी नीयत से बनाया गया है जहाँ विषय, कहानी और चलचित्र की कहानी कहने में ईमानदारी बरती गई है। तमाम तरह के रिस्क लेकर अपने पैशन के साथ चलचित्र बनाना जहां व्यावसायिक दबावों को दरकिनार कर सिर्फ़ चलचित्र की आत्मा पर ध्यान दिया गया है और बेकार की डायलॉगबाज़ी और गानों से बचा गया है जो की प्रशंसा के योग्य है। चलचित्र की हर कहानी आपको भावनाओं के सफ़र पर ले है जाती है। भले ही शुरुआत में आख़िर की कहानियों में दुहराव नज़र आता है पर जब वो अपने चरमोत्कर्ष पर आती है तो भावनाओं को झकझोर जाती हैं।

सभी कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय किया है। इंद्रनिल सेनगुप्ता (अर्जुन), बरखासेन गुप्ता (आरू), मंजरी फड़नीस (नैना), सिद्धांत कपूर (कृष्णा) और सीमा बिस्वास (लीला) इन सभी का बहुत सधा हुआ अभिनय, सीमा अपने किरदार के साथ कभी कभी चेहरे पर मुस्कुराहट भी बिखेर जाती हैं। चलचित्र का पार्श्व संगीत ठीक है और दृश्यों के भावुकता को बल देता है। साथ ही चलचित्र के दृश्यों को ख़ूबसूरती के साथ लिखा गया है।

।। जय हिंदी जय नागरी ।।

INDO WESTERN RESEARCHERS

ISSN 2349-10-27

Published, Printed, Owned by Sow. Mahananda B. Kamble & Edited by Dr. Anuradha S. Jagdale & Printed at Indo Vision Offset, Binding & Published by Jyotichandra Publication 'Gyandev - Parvati', R-9 / 139/6, Near Vishal School, L.I.C. Colony, Pragati Nagar, Latur. Dist. Latur-413531 (M.S.) India. Contact :- 8484818000, 7276301000.

ISSN 2349 - 1027

Editor In Chief : Dr. Anuradha S. Jagdale